8

यीशु पृथ्वी पर ज़्यों आया?

''जो काम तू ने मुझे करने को दिया था, उसे पूरा करके मैं ने पृथ्वी पर तेरी महिमा की है'' (यूहन्ना 17:4)।

आप अपने शहर में सड़क के किनारे टहल रहे हों और किसी समाचार पत्र का संवाददाता आपके पास आए और आपसे पूछे, ''आपके विचार से संसार के आरज़्भ से लेकर अब तक की सबसे बड़ी घटना ज़्या हो सकती है?'' तो आप उसे ज़्या उज़र देंगे? मानवीय इतिहास में सबसे बड़ी घटना कौन सी हो सकती है? मेरा उज़र होगा, कि प्रभु यीशु का इस संसार में हमारा उद्धारकर्ज़ा बनकर आना।

संसार की सबसे महत्वपूर्ण घटना यीशु का जीवन-यीशु अर्थात परमेश्वर के पुत्र, का मनुष्य बनना, देहधारी होना अर्थात शरीर बनना है। पौलुस ने लिखा है कि, यद्यपि यीशु का अस्तित्व परमेश्वर के रूप में था फिर भी उसने परमेश्वर के समान बने रहने को किसी भी तरह अपने वश में रखने की वस्तु नहीं समझा। उसने ''अपने आप को शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया'' और ''मनुष्य की समानता में हो गया'' (फिलिप्पियों 2:6, 7)। यूहन्ना के अनुसार, ''वचन देहधारी हुआ और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया और हमने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के इकलौते की'' (यूहन्ना 1:14)।

हम कह सकते हैं कि *मसीह इतना मुनष्य बना जैसे वह परमेश्वर हो ही न, और वह इतना ईश्वरीय था कि जैसे वह मनुष्य हो ही नहीं*। यीशु ने मनुष्य बनने के लिए मनुष्यजाति से अपना सज़्बन्ध इतना जोड़ लिया कि उसने वैसे जन्म लिया जैसे मनुष्य जन्म लेते हैं (लूका 2:6), सामान्य लोगों की तरह पला-बढ़ा (लूका 2:40), उन सभी कष्टों को सहा, जो मनुष्य पर आते हैं (इब्रानियों 5:8, 9) और देह में रहा जिस पर बीमारी, स्वास्थ्य में गिरावट और मृत्यु आ सकती थी अर्थात वह शरीर बना जिसे मनुष्य भी क्रूस पर मार सकते थे (फिलिप्पियों 2:8, 9)। वह सज़्पूर्ण मनुष्य था, और इस कारण मनुष्य का पुत्र था; तो भी वह सज़्पूर्ण परमेश्वर था और इस कारण वह परमेश्वर का पुत्र था (इब्रानियों 2:14, 17, 18)। वह मनुष्यता और परमेश्वरत्व का एक व्यज़्तित्व में सज़्पूर्ण मेल था। अपने ईश्वरीय होने का बलिदान किए बिना वह मनुष्य बना अर्थात हमारे जैसा बनने के बावजूद वह परमेश्वर ही था।

यीशु के पृथ्वी पर आने की बात गज़्भीर प्रश्नों को जन्म देती है जैसे यीशु इस प्रकार पृथ्वी पर ज़्यों आया? मनुष्यों में आकर, उनके साथ रहने, और क्रूस पर मरने का उसका ज़्या उद्देश्य था? परमेश्वर के पुत्र को इस सीमा तक नीचे आकर पूर्णतया मनुष्य बनने की ज़्या आवश्यकता थी? इन सभी प्रश्नों के उज़र इस संक्षिप्त वाज़्य में दिए जा सकते हैं: *''वह अपनी सेवकाई, मृत्यु तथा पुनरुत्थान के द्वारा अपने नाम के निमिज़ लोगों को जिन्हें उसने कलीसिया कह कर पुकारा था बुलाने आया''* (मरकुस 10:45; लूका 19:10)।

अन्य शज़्दों में, कलीसिया इस पृथ्वी पर उसके आने का परिगाम है। यीशु ने कोई पुस्तक नहीं लिखी, किसी कॉलेज की स्थापना नहीं की, या सांसारिक परिवार नहीं बनाया। एकमात्र वास्तविकता जो पृथ्वी पर उसकी सेवकाई से बनी, वह थी कलीसिया। एकमात्र देह जिसे यीशु ने बनाने की प्रतिक्षा की थी, वह आत्मिक देह थी जिसे उसने ''अपनी कलीसिया'' कहा (मज़ी 16:18)। एक ही नींव जो यीशु ने अपनी सेवकाई के समय रखी थी और वह कलीसिया की ही थी। इस प्रकार, कलीसिया को पृथ्वी पर मसीह के आगमन की *एकमात्र रचना* कहा जा सकता है।

सुसमाचार की पुस्तकों के द्वारा पुष्टि की गई

सुसमाचार के वृज़ांतों में इस सच्चाई की ज़ोरदार ढंग से पुष्टि की गई है। सुसमाचार की हर पुस्तक कलीसिया और स्वर्ग के राज्य की ओर संकेत करती है और वहां तक पहुंचाती है, जिसकी स्थापना यीशु ने अपनी मृत्यु और जी उठने के पश्चात पहले पिन्तेकुस्त के दिन की थी।

मसीह के जीवन का अध्ययन करने वाले के सामने सुसमाचार की पुस्तकों में तीन विषय होते हैं जो उसे मसीह की सेवकाई में मिलते हैं: (1) उद्देश्य, जो उसने पूरा करना था। (2) तैयारी के लिए उसका काम। (3) उसकी सेवकाई पूरी नहीं हुई थी।

पहला, सुसमाचार की पुस्तकों से पता चलता है कि अपनी निजी सेवकाई के दौरान यीशु संसार में सुसमाचार ले जाने के लिए नहीं निकला था। अपने प्रेरितों को चुनने के बाद, उसने उन्हें प्रचार के लिए सारे संसार में जाने का अधिकार नहीं दिया; बल्कि उसने उनका जोश यह कह कर ठण्डा कर दिया कि ''अन्यजातियों की ओर न जाना, सामरियों के किसी नगर में प्रवेश न करना। परन्तु इस्राएल के घराने की खोई हुई भेड़ों के पास जाना'' (मज़ी 10:5, 6)। हमें आश्चर्य होता है कि यीशु ने अपनी सेवकाई के समय अपने आप को पलिश्तीन तक ही सीमित ज़्यों रखा था। वह रोमी साम्राज्य से बाहर के देशों में कभी नहीं गया। उसका उद्देश्य संसार के एक छोटे से क्षेत्र में प्रचार करने और शिक्षा देने से ही पूरा हो गया। यदि यीशु अपनी निजी सेवकाई के दौरान पूरे संसार में सुसमाचार पहुंचाने जाता तो, उसने अपने काम को बिल्कुल ही अलग ढंग से, अर्थात बड़े स्तर पर नीतियां और नियम बनाकर करना था।

दूसरा, सुसमाचार की पुस्तकों से पता चलता है कि यीशु का जीवन, उसके काम और

मृत्यु सब किसी आने वाले समय के लिए तैयारी थी। यीशु यही प्रचार करता था, ''मन फिराओ ज़्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है'' (मज़ी 4:17ख)। उसने अपने चेलों को सिखाया कि वे प्रार्थना करें कि ''तेरा राज्य आए'' (मज़ी 6:10क)। यीशु ने बड़ी सावधानी से अपने आश्चर्यकर्मों से अति उत्साहित होकर यह धारणा बनाने से कि उसे सांसारिक राजा बनाया जाए, भीड़ को रोके रखा था। उसने अपनी समयसारणी बनाने की लोगों की भीड़ को अनुमति नहीं दी। आश्चर्यकर्म करने के बाद, यीशु ने कई बार आश्चर्यकर्म से चंगाई पाने वालों को कहा, ''देख, किसी से न कहना'' (मज़ी 8:4)।[1] उसने बारह प्रेरित चुने और उन्हें स्वयं प्रशिक्षित किया, परन्तु यह स्पष्ट है कि वह उन्हें प्रशिक्षण उस काम का दे रहा था जो उन्होंने उसके जाने के बाद करना था (यूहन्ना 14:19)।

तीसरा, सुसमाचार की पुस्तकों से यीशु की सेवकाई के अधूरा होने का पता चलता है। यीशु ने वही किया, जो पिता ने उसे करने के लिए भेजा था; परन्तु पृथ्वी पर अपने जीवन के अन्त में, उसने अपने चेलों को तैयार किया कि वे स्वर्ग पर उसके उठाए जाने के बाद अगली घटनाओं और रहस्यों के घटित होने की राह देखें। यीशु ने प्रेरितों से कहा, ''परन्तु सहायक, अर्थात पवित्र आत्मा, जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैंने तुमसे कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा'' (यूहन्ना 14:26)। उसने उन्हें यह भी बताया, ''परन्तु जब वह अर्थात सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा; ज़्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा और आने वाली बातें तुम्हें बताएगा'' (यूहन्ना 16:13)। जी उठने के बाद और ऊपर उठाए जाने से कुछ समय पहले, यीशु ने अपने प्रेरितों को आज्ञा दी कि जब तक वे ऊपर से सामर्थ न पा लें; यरूशलेम में ही रुके रहें। सामर्थ पाकर, उन्हें यरूशलेम से आरम्भ करके सब जातियों में मन फिराने और पापों की क्षमा का प्रचार करना था (लूका 24:46-49)।

हमारे प्रभु की मृत्यु से पहले और बाद की सेवकाई की इन विशेष बातों से साफ पता चलता है कि पृथ्वी पर उसकी सेवकाई उसके राज्य, अर्थात कलीसिया को बनाने के लिए आवश्यक वस्तुओं को एकत्र करना था। मज़ी 16:18 में यीशु ने चेलों को पृथ्वी पर अपने काम का उद्देश्य बताया; ''और मैं भी तुझ से कहता हूं कि तू पतरस है, और मैं इस चट्टान पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा; और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।'' *इस प्रकार, यीशु सुसमाचार का प्रचार करने के लिए नहीं बल्कि इसलिए आया कि सुसमाचार का प्रचार हो सके।*

प्रसिद्ध मूर्तिकार गुटज़ोन बोरग्लम, जिसने दक्षिणी दकोटा में भव्य पर्वत रशमोर को तराशा था, वाशिंगटन डी.सी. में राजभवन के लिए अब्राहम लिंकन की मूर्ति भी बनाई थी। इसे उसने अपनी शिल्पशाला में संगमरमर के एक टुकड़े से तैयार किया था। कहते हैं कि स्टूडियो की सफाई करने के लिए हर रोज़ आने वाली महिला ने जब सजीव मूर्ति को पहली बार देखा तो वह एक क्षण के लिए अवाक् सी रह गई और कहने लगी थी, ''इन्हें कैसे मालूम था कि लिंकन पत्थर के इस टुकड़े में था?'' उसके प्रश्न का उज़र यह है कि बोरग्लम को वह दिखाई दिया था जो दूसरों को नहीं दिखता था। उसके पास एक कलाकार

की आंख, और एक मूर्तिकार का अनुभव था। इससे पहले कि उसके निपुण हाथ और दिव्यदर्शी मन इसे लोगों के सामने लाते, उसने उस पत्थर में उसका चेहरा देख लिया था।

सुसमाचार की पुस्तकों की सहायता से हमें पता चलता है कि यीशु ने पृथ्वी पर अपनी सेवकाई के समय ज़्या देखा था। उसकी सेवकाई में शीघ्र आने वाले राज्य का दर्शन और उसकी तैयारी छिपी हुई थी। उसने इसके बारे में प्रचार किया, इसके लिए तैयारी की और अपने लहू से इसे मोल ले लिया।

प्रेरितों के काम द्वारा पुष्टि

नये नियम की प्रेरितों के काम की पुस्तक यह पुष्टि करती है कि यीशु की सेवकाई, मृत्यु, और जी उठने का उद्देश्य कलीसिया को बनाना, अर्थात राज्य को लाना था। सुसमाचार की पुस्तकों में इस सत्य को स्पष्ट बताया गया है और प्रेरितों के काम की पुस्तक इस घोषणा का सजीव चित्रण करती।

हमारे प्रभु के स्वर्ग पर उठाए जाने के दस दिन बाद, पिन्तेकुस्त के दिन प्रेरितों को आश्चर्यकर्म से पवित्र आत्मा दिया गया था (प्रेरितों 2:1-4); यीशु की मृत्यु, गाड़े जाने, तथा जी उठने का प्रचार पहली बार किया गया; लोगों को निमन्त्रण दिया गया कि इस सुसमाचार को विश्वास करके, मन फिराकर और अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेकर ग्रहण करें (प्रेरितों 2:38; लूका 24:46, 47); और तीन हज़ार लोगों ने वचन को मानकर और बपतिस्मा लेकर इस निमन्त्रण को स्वीकार किया (प्रेरितों 2:41)। इसलिए, रात के बाद दिन आने की तरह ही यीशु की सेवकाई के बाद हमारे प्रभु की कलीसिया का जन्म हुआ था।

यीशु सुसमाचार का प्रचार करने के लिए नहीं आया बल्कि वह इसलिए आया ताकि प्रचार करने के लिए सुसमाचार हो।

प्रेरितों के काम की पुस्तक की अगली कहानी कलीसिया के विकास की कहानी है जो पवित्र प्रेम की आग की तरह, यरूशलेम से यहूदिया, सामरिया और उसके आगे, रोमी साम्राज्य के अन्य भागों में फैलती गई। प्रेरितों के काम की पुस्तक में जहां भी परमेश्वर की प्रेरणा से प्रचार हुआ, सुनने वालों ने उसे माना और कलीसिया में आने से ग्रहण किया। प्रेरितों के काम की पुस्तक में जब भी मिशनरी यात्रा हुई, संसार के नये-नये क्षेत्रों में कलीसियाएं बनती गईं। प्रेरितों के काम की पुस्तक में पौलुस की तीन मिशनरी यात्राओं में यरूशलेम से लेकर इल्लुरिकुम तक, चारों ओर कलीसियाएं स्थापित हो गई थीं (रोमियों 15:19)। प्रेरितों के काम की पुस्तक पढ़ने वाले को इस निष्कर्ष पर पहुंचना ही पड़ता है कि कलीसिया पृथ्वी पर यीशु के आगमन का परिणाम है।

एक प्रचारक से मैंने एक बार सुना था, ''संसार में सुसमाचार पहुंचाने के काम के लिए हमें वैसे ही ढंग अपनाने चाहिए, जो यीशु ने अपनाए थे। आइए, अपने आस-पास ओर

बारह पुरुषों को एकत्र करके उन्हें भावी कार्य के लिए प्रशिक्षित करें। यीशु हमें दिखाता है कि हम कैसे उसके ढंग के अनुसार संसार में सुसमाचार का प्रचार करें। नि:संदेह, यीशु अपने हर काम में सिद्ध था। परन्तु उसकी सेवकाई का गहन अध्ययन करने पर पता चलता है कि अपनी सेवकाई के समय उसका विशेष कार्य संसार में सुसमाचार ले जाना नहीं था। उसका काम तो कलीसिया के लिए नींव रखना और संसार में सुसमाचार पहुंचाने की रूपरेखा के भागों को एकत्र करना था। उसने अपने इस विशेष कार्य (मिशन) को पूरा करने के लिए उपयुक्त ढंग और माध्यम अपनाए, एक विशेष कार्य (अर्थात मिशन) जो सुसमाचार प्रचार करने के उस विश्वव्यापी मिशन से भिन्न था, जो उसने अपने चेलों को दिया।

प्रेरितों के काम की पुस्तक में हमें ऐसा नहीं मिलता कि प्रेरितों और परमेश्वर की प्रेरणा पाए किसी और व्यक्ति ने वही ढंग अपनाया हो, जो हमारे प्रभु ने अपनाया था। उन्होंने शिक्षा देने तथा बारह लोगों को प्रशिक्षित करने के लिए अपने इर्द-गिर्द एकत्र करने के उसके ढंग की नकल नहीं की। इसके बजाय प्रेरितों और परमेश्वर की प्रेरणा पाए अन्य लोग अपने प्रचार तथा शिक्षा के माध्यम से लोगों को कलीसिया में लाए। इन नए मसीहियों को, कलीसिया द्वारा कलीसिया के एक अंग के रूप में प्रशिक्षित करके, सेवा और सुसमाचार प्रचार के लिए बड़ा किया गया। प्रेरितों के काम की पुस्तक स्पष्ट करती है कि कलीसिया का आना तो पृथ्वी पर यीशु की सेवकाई का ही फल था। नये नियम का 48 प्रतिशत भाग यीशु के जीवन की बातें हैं; शेष 52 प्रतिशत भाग में मसीह के जीवन, मृत्यु व पुनरुत्थान का फल अर्थात कलीसिया है।

पत्रियों द्वारा पुनः पुष्टि हुई

नये नियम की पत्रियां इस सच्चाई की प्रासंगिकता पर ज़ोर देती हैं कि कलीसिया पृथ्वी पर मसीह के जीवन और मृत्यु का स्वाभाविक सुखद फल है। सुसमाचार की पुस्तकें इस सच्चाई को दृढ़तापूर्वक बताती हैं, प्रेरितों के काम की पुस्तक इसे चारों ओर फैलाती है, और पत्रियां इसे लागू करती हैं। पत्रियों से पता चलता है कि उसकी आत्मिक देह के रूप में हमें मसीह का जीवन लोगों के सामने कैसे प्रस्तुत करना चाहिए।

पत्रियां उन लोगों के लिए लिखी गई थीं, जिन्होंने विश्वास तथा आज्ञा पालन से मसीह के पास आना चुना था। वे उस समय में रह रहे थे जब मसीह के जीवन, मृत्यु तथा जी उठने का असर ताज़ा-ताज़ा था। परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए लोगों के संदेशों का सार था कि मसीह को प्रभु के रूप में महिमा दी गई है और अपने बीच में उसके मानवीय जीवन को हमने उसकी कलीसिया बनकर पूरी तरह स्वीकार कर लिया है।

हर पत्री में मसीह को मानने वालों से आग्रह किया गया है कि वे मसीह की आत्मिक देह के रूप में जीवन बिताएं और सेवा करें। वास्तव में, पत्रियों को इकट्ठा करने पर इनसे हमें अलग-अलग स्थानों पर हर प्रकार की परिस्थितियों में मसीह की कलीसिया बनकर जीने का ''मार्गदर्शन'' मिलता है। ये हमें सिखाती हैं कि हम अपने जीवनों में पृथ्वी पर मसीह की सेवकाई को कैसे प्रयोग में लाएं।

आज्ञाकारी विश्वास से उसकी देह में शामिल होकर हम यीशु को प्रभु मानते हैं। विश्वास के इस अन्तिम कार्य को पौलुस ने मसीह को पहनना कहा (गलतियों 3:27)। पत्रियों के अनुसार बिना विश्वास किए, मन फिराए और यीशु को परमेश्वर का पुत्र मानकर उद्धार पाने के लिए बपतिस्मा लेकर उसकी देह में प्रवेश किए व्यक्ति यीशु के प्रति समर्पित नहीं होता।

यीशु की आत्मिक देह अर्थात कलीसिया में, परमेश्वर के परिवार के रूप में इकट्ठे रहने और आराधना के द्वारा हम उसके जीवन, मृत्यु तथा पुनरुत्थान का सम्मान करते हैं। पौलुस ने कहा:

> अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी, न कोई दास न स्वतन्त्र; न कोई नर, न नारी; क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो (गलतियों 3:28)।
>
> क्योंकि जैसे हमारी एक देह में बहुत से अंग हैं, और सब अंगों का एक ही सा काम नहीं; वैसा ही हम जो बहुत हैं, मसीह में एक देह होकर आपस में एक दूसरे के अंग हैं (रोमियों 12:4, 5)।
>
> ... देह में फूट न पड़े, परन्तु अंग एक दूसरे की बराबर चिन्ता करें। इसलिए यदि एक अंग दु:ख पाता है, तो सब अंग उसके साथ दु:ख पाते हैं; और यदि एक अंग की बड़ाई होती है, तो उसके साथ सब अंग आनन्द मनाते हैं। इसी प्रकार तुम सब मिलकर मसीह की देह हो, और अलग-अलग उसके अंग हो (1 कुरिन्थियों 12:25-27)।
>
> सप्ताह के पहिले दिन जब हम रोटी तोड़ने के लिए इकट्ठे हुए, तो पौलुस ने ... उनसे बातें कीं, ... (प्रेरितों 20:7)।

परमेश्वर के घर अर्थात कलीसिया के रूप में जीवन बिताने और आराधना करने में नाकाम होने पर जब हम उसमें से वह निकाल देते हैं जिसे पूरा करने के लिए यीशु आया और जिस काम को करने के लिए वह मरा तो उसे हानि पहुंचाते हैं।

यीशु ने हमें अपनी देह अर्थात अपनी कलीसिया बनने के लिए बुलाया है। पत्रियों में उसके लोगों के लिए मसीह की कलीसिया के अलावा किसी अन्य कलीसिया या देह का वर्णन नहीं है। पत्रियों के अनुसार, यीशु ने अपने पीछे चलने के लिए हमारे लिए केवल एक ही मार्ग बनाया। उसकी सेवा के लिए उसके लहू और उद्धार पाने के लिए केवल एक मार्ग है। वह मार्ग इस संसार में उसकी आत्मिक देह के रूप में आज्ञाकारिता से जीना है।

एक छोटी लड़की को अपने घर के कोने में एक बाइबल पड़ी मिली। उसे उठाकर वह अपनी मां से पूछने लगी, ''मां यह किसकी किताब है?'' उसकी मां ने कहा ''यह परमेश्वर की किताब है, इसे पवित्र बाइबल कहते हैं।'' छोटी लड़की ने बड़ी समझदारी से सलाह दी, ''इसे उसी के पास क्यों न भेज दें, क्योंकि हमने तो कभी इसका उपयोग नहीं किया?''

सच्चाई यह है कि हम इसे पढ़ तो सकते हैं परन्तु वास्तव में इसका इस्तेमाल नहीं करते। शायद हम हर वार्तालाप में बाइबल का उदाहरण देते हैं, प्रतिदिन इसे पढ़ते हैं, परन्तु फिर भी इसे *व्यवहार में लाने में असफल* रहते हैं। बाइबल को सही ढंग से प्रयोग में लाने के लिए आवश्यक है कि हम मसीह की कलीसिया बनकर व्यावहारिक ढंग से इसकी बात मानें। जब हम वह बनते हैं, जो बाइबल हमें बनने के लिए कहती है, तभी हम इसका सही और उचित उपयोग कर रहे होते हैं।

सारांश

इसलिए सज़्पूर्ण नया नियम यह सिखाने के लिए कि कलीसिया, जो मसीह की आत्मिक देह है, मसीह के मनुष्य बनने के उद्देश्य की रचना है। सुसमाचार की पुस्तकों ने इसका वायदा करके इसकी पुष्टि की है, प्रेरितों के काम की पुस्तक ने इसे चित्रित करके इसकी पुष्टि की है, और पत्रियों ने इसे जीवन के व्यावहारिक उपयोग में लाकर इसकी पुन: पुष्टि कर दी है।

ज़्योंकि नया नियम कहता है कि जो हमारे उद्धार के लिए आया, मारा गया और मरे हुओं में से जी उठा, उसे ग्रहण करने का हमारे पास एक ही ढंग है कि हम उसकी कलीसिया में शामिल हों और उसके विश्वासी सदस्य बनकर रहें। प्रश्न जो इसके बाद आता है वह यह है कि ''ज़्या आप उसकी देह में हैं ?'' जीवन के अन्त में यह विचार करना कि आप जीवन के असली उद्देश्य को पूरा करने में चूक गए हैं, कितनी भारी भूल होगी! शायद इससे भी अधिक उदास करने वाली बात उस उद्देश्य में चूकना है जिसे पूरा करने के लिए परमेश्वर का पुत्र पृथ्वी पर आया था। जितना निश्चित यह है कि नया नियम परमेश्वर के उद्धार का ईश्वरीय संदेश देता है और मसीह इस पृथ्वी पर मनुष्य बनकर आया, उतना ही यह कि उसकी देह में शामिल न होने वाले को जीवन की यात्रा के अन्त में समझ आएगा कि उसने यीशु के पृथ्वी पर आने का कारण न जानकर गलती की। यह निष्कर्ष संपूर्ण नए नियम की बुनियादी शिक्षा है।

अपने संक्षिप्त से जीवनकाल के अन्त में मसीह कह सकता था, ''हे पिता, जो कुछ करने के लिए तूने मुझे कहा था, वह मैंने कर दिया। मैंने उस उद्देश्य को पूरा किया जो तूने मुझे सौंपा था।'' स्वार्थ के लिए राज्य पर शासन करते हुए लज़्बी उम्र भोगने से परमेश्वर की इच्छा के घेरे में रहकर, उसके उद्देश्यों को पूरा करके पृथ्वी पर थोड़े वर्ष जीना अच्छा है, इस जीवन के अन्त में बहुत से लोग केवल यही कह सकते हैं, ''हे परमेश्वर इस पृथ्वी पर जीने के लिए जितना समय तूने मुझे दिया मैंने उतना जीवन जिया, और मैंने वही किया जो मेरी इच्छा हुई। मैंने वही कार्य किया जो मुझे अच्छा लगा।''

या यह भी हो सकता है कि इस जीवन के अन्त में हम कह पाएं, ''हे प्रभु, जो कुछ तूने मुझसे चाहा था कि मैं करूं और बनूं, मैंने उसे तेरे वचन में से ढूंढ़ लिया, और उस लक्ष्य को पूरा करने के लिए अपने आप को दे दिया। मैंने सच्चे मन से पृथ्वी पर तुझे महिमा देने का प्रयास किया, और उसी योजना के अनुसार जीना चाहा, जो तूने मेरे लिए बनाई थी। मैंने मसीह की कलीसिया में होकर जीवन बिताया।''

पाद टिप्पणी

[1]मत्ती 9:30; 12:16; 17:9; मरकुस 1:44; 3:12; 5:43; 7:36; 8:30; 9:9; लूका 4:41; 8:56; 9:21 भी देखिए। अजीब आज्ञा ''किसी से न कहना'' के बारे में जे. डब्ल्यू. मैज़र्वे ने लिखा है: ''ऐसा लोगों में पाई जाने वाली ऐसी बेवजह उत्तेजना से बचने के लिए था जिसमें सैनिक अधिकारियों का हस्तक्षेप बढ़ सकता था जिससे लोग शांति से यीशु की शिक्षाओं की ओर ध्यान न दे पाते। (तु. मरकुस 1:45.) कई बार, अवसर की आवश्यकता के अनुसार, उसने अपनी बात के विपरीत उन्हें आज्ञा दी कि जो कुछ उसने उनके लिए किया है वे जाकर लोगों को बताएं'' (जे. डब्ल्यू. मैज़र्वे, *द न्यू टैस्टामेंट कमैन्ट्री: मैथ्यू एण्ड मार्क* [पृ.न., 1875; रीप्रिंट, डिलाइट, आरकैंसा: गॉस्पल लाइट पब्लिशिंग कं., पृ.न.], 75)।

अध्ययन व चर्चा के लिए प्रश्न

1. संसार के इतिहास की सबसे बड़ी घटना कौन सी है? अपने उज़र का कारण बताएं।
2. ज़्या यीशु सज़्पूर्ण मनुष्य था या केवल आंशिक मनुष्य?
3. ज़्या यीशु सज़्पूर्ण परमेश्वर था या केवल आंशिक परमेश्वर?
4. यीशु पृथ्वी पर ज़्यों आया? वह कौन सा उद्देश्य है जिसे पूरा करने के लिए वह पृथ्वी पर आया था?
5. ज़्या आप यीशु की सेवकाई को अधूरा कहेंगे?
6. ज़्या अपनी सेवकाई के दौरान यीशु संसार को सुसमाचार देने की कोशिश कर रहा था?
7. समझाएं कि यीशु की सेवकाई किस प्रकार आने वाली किसी बात की तैयारी के लिए थी।
8. ज़्या हमें उन्हीं ढंगों को अपनाना चाहिए जो हमारे प्रभु ने अपनाए थे? ज़्यों या ज़्यों नहीं के लिए अपने कारण बताएं।
9. नये नियम में पत्रियों का ज़्या काम है?
10. हमें पृथ्वी पर यीशु की सेवकाई को कैसे मानना चाहिए?
11. ज़्या हम बिना यीशु की कलीसिया बने उसके जीवन को सही ढंग से स्वीकार कर सकते हैं?
12. ज़्या हम उसकी कलीसिया बनकर रहे बिना इस संसार में यीशु के मिशन या उद्देश्य को पूरा कर सकते हैं?